IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 5.731
Volume 2, Issue 1, February 2021

आदिवासी विमर्श और निर्मला पुतुल की कविताएं

डॉ० लालजीत राम
असिस्टेंट प्रोफेसर -हिन्दी
पं० रामलखन शुक्ल राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय आलापुर, अम्बेडकर नगर, उ०प्र०

शोध सारांश:- आदिवासी साहित्य मुख्यधारा के विमर्श से अलग, जल-जंगल-जमीन और आदिवासी अस्मिता की आवाज़ है। यह साहित्य सदियों के शोषण, विस्थापन और सांस्कृतिक अतिक्रमण के विरुद्ध प्रतिरोध दर्ज करता है। प्रकृति यहाँ केवल पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन और देवी है। इसी धारा की सशक्त कवयित्री हैं निर्मला पुतुल। झारखंड की संथाल जनजाति से आने वाली निर्मला पुतुल आदिवासी स्त्री-स्वर की सबसे प्रामाणिक आवाज़ मानी जाती हैं। इनकी कविताएँ हिंदी में हैं, पर इनकी संवेदना पूरी तरह संथाली है। पहला संग्रह 'नगाड़े की तरह बजते शब्द' 2004 में आया और इन्हें पहचान दिलाई।

निर्मला पुतुल की कविता में आदिवासी स्त्री का दोहरा संघर्ष दिखता है – एक बाहर के समाज से और दूसरा अपने ही समाज के पितृसत्ता से। 'अपने घर की तलाश' कविता में वे लिखती हैं कि आदिवासी स्त्री के लिए घर भी सुरक्षित नहीं। 'उतना ही लो थाली में' जैसी कविताएँ संथाल दर्शन 'खाने के लिए जियो, जीने के लिए मत खाओ' को सामने रखती हैं। यह पूँजीवादी उपभोग के विरुद्ध सीधी चेतावनी है।

निर्मला पुतुल की भाषा सहज है पर मारक है। वे शहरी बुद्धिजीवियों के 'आदिवासी रोमांस' को तोड़ती हैं और बताती हैं कि असली आदिवासी जीवन संघर्ष, विस्थापन और पहचान के संकट से भरा है। उनकी कविता 'रिपोर्ट' नहीं, 'आत्म-कथ्य' है। इस तरह निर्मला पुतुल आदिवासी साहित्य को स्त्री-दृष्टि और जमीनी यथार्थ से समृद्ध करती हैं।

मूल शब्द:- सर्वहारा, अस्मिता, उद्घोष, विद्रूपता, विडंबना, पितृसता, सम्भ्रांत, जिस्मानी।

आदिवासी समाज की अपनी एक आदिम सभ्यता और संस्कृति रही है। सब कुछ होने के बावजूद यह समाज हमेशा हासिए पर रहते हुए घोर संकट के दौर से गुजर रहा है। वर्तमान समय में जहां दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, मुस्लिम विमर्श जैसे मुद्दे साहित्य के केंद्र में बने हुए हैं वहीं आदिवासी विमर्श भी साहित्यिक पटल पर अपनी अस्मिता स्थापित कर रहा है। दलित व आदिवासी दोनों ही सर्वहारा वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं दोनों ही समाज से कटे व धार्मिक पाखंडों, रूढ़ियों व सामाजिक संरचनाओं के शिकार हैं, किंतु जब देश आजाद हुआ तब दलित समाज कुछ हद तक मुख्य धारा में शामिल हुआ, किंतु आदिवासी समाज मुख्य धारा से कटा रहा और हमेशा चिंतन और विमर्श के नए बिंदु पर उपस्थित

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 5.731
Volume 2, Issue 1, February 2021

हुआ। जबकि आदिवासी विमर्श में आदिवासी समाज की अस्मिता पर्यावरण को बचाने की चिंता आजादी के बाद सरकार के द्वारा नीतियों का शिकार आदिवासी समाज भूमंडलीकरण और पूंजीवादी संस्कृति द्वारा आदिवासी जनजीवन से साथ खिलवाड़ होता रहा है। दलित और आदिवासी आंदोलन में जमीर आंदोलन को महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि इस आंदोलन के अंतर्गत भूमिहारों के द्वारा शोषण एवं अत्याचार के विरुद्ध आदिवासी समुदाय ने अपने आप सम्मान के लिए बहुत संघर्ष किया है।

हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श को गति देने वाला राज्य झारखंड जो बहुतआयत आदिवासी समाज के लोग निवास करते हैं। हमेशा अपने हक अधिकार के लिए संघर्ष उन बड़े पूजी पतियों कंपनी मालिकों से करते रहे हैं, इसका एक उदाहरण हजारीबाग से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'युद्ध पर आम आदमी'(1981 संपादक रमणिका गुप्ता) और उदयपुर राजस्थान से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'अरावली उद्घघोष' के संपादक बी.पी. वर्मा 'पथिक'को दिया जाता है।**1** इन पत्रिकाओं में न सिर्फ आदिवासी समाज की समस्याओं को उद्घाटित किया बल्कि आदिवासियों द्वारा रचित साहित्य के माध्यम से उनकी समस्याओं के संपूर्ण भारत को अवगत कराया आदिवासी समाज की चिताओं को लेकर आज साहित्यिक पटल पर बहुसंख्यक रचनाधर्मी रचनाशील नजर आते हैं। जिसमें आदिवासी लेखिका निर्मला पुतुल आज किसी परिचय के मोहताज नहीं है। वे अपनी कविताओं में सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक रूपों में संघर्ष करती हुई दिखाई देती हैं और हासिए पर रहते हुए अपने समाज की अस्मिता की मांग रखती रही है।

आदिवासी समाज के संघर्ष, त्याग और समर्पण को निर्मला पुतुल की कविताएं में आदिवासी स्त्री-पुरुष के जीवन में व्याप्त दुःख, त्रासदी अत्याचार की कहानी तो कहती ही है साथ ही सवर्ण जमीदारों, शासन-प्रशासन की तानाशाही क्रुरता, शोषण, अत्याचार, बलात्कार जैसी विद्रूपताओं का पर्दाफाश करती हैं। अपनी कविता संग्रह 'नगाड़े की तरह बजाते शब्द' में ताना-बाना बुनती नजर आती हैं। निर्मला पुतुल एक स्त्री होने के नाते स्त्री की वेदना व उसकी मनोव्यथा को भली-भांति अभिव्यक्ति देती सकती है। अपने काव्य संग्रह में सभ्यता के विकास और प्रगति की अवधारणा को चुनौती देती हुई प्रतिरोध की भावना को कविता के माध्यम से व्यक्त करती हैं-

"आज की तारीख के साथ
की गिरेगी जितनी बंदे लहू की पृथ्वी पर
उतनी ही जनमेगी निर्मला पुतुल
हवा में मुट्ठी---बँधे हाथ लहराते हुए।"**2**

निर्मला पुतुल अपनी कविता संग्रह में स्त्री को सदियों से रसोई और बिस्तर की वास्तु समझने की कोशिश की गई है। वह हर जिस्मानी स्तर पर पुरुष समाज ने स्त्री को स्त्री रूप में समझाने का कमी प्रयास नहीं किया गया। इन सभी यथा स्थितियों की मार्मिक अभिव्यक्ति निर्मला पुतुल अपनी कविता में करती हैं-

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 5.731
Volume 2, Issue 1, February 2021

"तन के भूगोल से परे
एक स्त्री की गाठे खोलकर
कभी पढ़ा है तुमने
उसके भीतर का खौलता इतिहास?
.....
अगर नहीं
तो फिर जानते क्या हो तुम
रसोई और बिस्तर के गणित से परे
एक स्त्री के बारे में"? 3

आदिवासी जीवन की समस्याओं को लेकर निर्मला पुतुल अपनी रचनाओं में इतना सजग है कि उन पर होने वाले अत्याचार, बेबसी को बहुत नजदीकी से देखती हैं। वह एक स्त्री होने के नाते आदिवासी समाज महिलाओं को संबोधित करती हुई उनकी हर पल की समस्याओं को व्यक्त करते हैं-

" तुम्हारे हाथों बने पत्तल पर
भरते हैं हजारों
और हजारों पत्तल भर नहीं पाते पेट
कैसी विडंबना है
कि जमीन पर बैठकर बुनती हो चटाइयां
और पंख बनाते टपकता है
तुम्हारे करियाये देह से टप-टप पसीना
.....
जिन घरों के लिए बनाती हो झाड़ू
उन्हीं के घरों में आते हैं कचरा
तुम्हारी बस्तियों में।"4

कवयित्री इस कविता के माध्यम से आदिवासी कामगार महिलाओं के किए गए कामों को उजागर करते हैं और एक संपन्न समृद्ध उच्च वर्ग की जरूरत के लिए पत्थर चटाइयां दातुन इतिहास बनाते हैं वह अनेक अभावग्रस्त तरह-तरह की परेशानियों से लाचार जीवन व्यतीत कर रहे हैं उनकी स्थिति को कविता में उजागर किया गया है ।

आदिवासी समाज की महिलाओं की समस्या को लेकर निर्मला पुतुल कविता 'अपने घर की तलाश में' के माध्यम से स्त्री जीवन के उस सच को उद्घाटित करती नजर आती हैं जिसमें स्त्री अपने आप भीतर से पूरी की पूरी धरती समाहित किए हुए हैं। वह जननी है किंतु उसके साथ ऐसी विडंबना है कि उसके पास कोई जमीन ऐसी नहीं है। जिसे वह

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 5.731
Volume 2, Issue 1, February 2021

अपना सके, अपनी पीड़ा को लेकर एकांत में बैठकर शांत कर सके। वह तो जी तोड़ मेहनत कर मकान बनती है किंतु उसे वह अपना घर बनाने में असमर्थ है। उसके सामने दरवाजे पर नेम प्लेट लगती है तो उसने अपने पति का स्त्री समाज की एक अहम कड़ी है समाज का विकास उनके बिना संभव नहीं है। यही कारण है कि उसे घर की संज्ञा से नवाजा जाता है किंतु इन सबके विपरीत वास्तविकता यह है कि वह अपने परिवार व समाज में अपेक्षित वह प्रताड़ित है। स्त्री पीड़ा को कविता के माध्यम से व्यक्त किया है -

"अन्दर समेटे पूरा का पूरा घर
मैं बिखरी हू पूरे घर में
पर यह घर मेरा नहीं है
बरामदे पर खेलते बच्चे मेरे हैं
घर के बाहर लगी नेम प्लेट मेरे पति की है
मैं धरती नहीं पूरी धरती होती है मेरे अंदर
पर यह नहीं होती मेरे लिए।"**5**

स्त्री चाहे सवर्ण समाज की हो या दलित, आदिवासी समाज की वह किसी न किसी रूप में पूरे परिवार से उपेक्षित रहती है। एक तरफ पुरुष की वर्चस्व संभावना से तो दूसरी तरफ पितृसत्तात्मक व्यवस्था से। स्त्रियां चाहे उच्च वर्ग की हो या निम्न वर्ग की लेकिन पितृसत्ता के नशे में पुरुष हमेशा शोषण करना चाहता है। स्त्री के मनोदशा का चित्रण निर्मला पुतुल अपनी कविता 'क्या हूं मैं तुम्हारे लिए' शीर्षक में बड़ी सुक्ष्मता के साथ किया है। पुरुष वर्ग स्त्री को किसी सामान से अधिक नहीं समझता जिसे जैसे चाहे इस्तेमाल किया।इसका एक उदाहरण प्रस्तुत है-

" खामोश खड़ी दीवार
कि जब जहां चाहा
कील ठोक दी
कोई गेंद
कि जब तक
जैसे चाहा उछाल दी
या कोई चादर कि जब जहाॅं-तैसे
ओढ़-बिछा ली?
चुप क्यों हो!
कहो न,क्या हूं मैं
तुम्हारे लिए?"**6**

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 5.731
Volume 2, Issue 1, February 2021

स्त्रियों की दशा से व्यथित होकर कवयित्री आदिवासी समाज की सामग्र महिलाओं के पीड़ा को अपने साहित्य का विषय बनाया उसके साथ-साथ वह प्राकृतिक संरचनाओं में पेड़-पौधे, पहाड़-नदियां, नदी-नाले आदि से प्रेम है। कण-कण में प्रकृति की संरचना रची बसी हुई है किंतु पूंजीपतियों ने अपने लाभ के लिए दिन प्रतिदिन जंगल को काटकर उसकी पृष्ठभूमि से छेड़छाड़ कर दिया है। संथाल परगना जैसी प्रकृति संरचना अब नष्ट होती जा रही है।

आजादी के आज इतने वर्षों उपरांत भी आदिवासी समाज हसीए का ही समाज बना हुआ है। सांस्कृतिक दृष्टि से सर्वाधिक संपन्न होने पर भी वह शैक्षणिक व आर्थिक रूप से पिछड़ेपन का शिकार है। वह आज भी निर्वासित अभावग्रस्त जीवन जीने के लिए अभिशप्त है। सरकार मात्र प्रगति के दावे और छलावे करती है। इन सब के प्रति विरोध व विद्रोह का भाव निर्मला पुतुल की कविताओं में अभिव्यक्त हुआ है-

" ये वे लोग हैं
जो हमारे बिस्तर पर करते हैं
हमारी बस्ती का बलात्कार
और हमारी ही जमीन पर खड़े हो
पूछते हैं हमसे हमारी औकात
ये वे लोग हैं
जो मेरी कविताओं में भी तलाशते हैं
मेरी देह!"**7**

लोकतंत्र के नाम पर आदिवासी समाज के साथ कई दशकों से अनदेखी करती जा रही है। सरकार अपनी नीतियों के कारण हमेशा पूंजीपतियों के पक्ष में काम करती रही है और उसके जमीन जीवन से खिलवाड़ किया है।

निर्मला पुतुल की कविताएं सच को बयां करती हैं बिना सहमें बिना डरे, एक प्रकार से भोगे हुए यथार्थ की प्रत्यक्षदर्शी है। उनकी कविताएं बिना किसी लाभ लपेट के सच को उद्घाटित करने की अभूतपूर्व क्षमता उनकी कविताओं में विद्यमान है। चिकनी, चुपड़ी भाषा, चंद, लय, तुक से परे ऊबड़-खाबड़ भाषा में अपने भावों की अभिव्यक्ति देती हैं। जिसे स्वयं अपनी कविताओं में स्वीकार करती हैं-

"बिना किसी लाख लपेट के
तुम्हें अच्छा लगे, ना लगे, तुम जानो
चिकनी-चुपड़ी भाषा की उम्मीद न करो मुझसे
जीवन के उबाल-खाबड़ रास्ते पर चलते
मेरी भाषा भी रुखडी हो गई है।"**8**

वे अपनी रचनाओं के माध्यम से आदिवासी समाज में चेतना जागृत करना चाहती हैं। निर्मला पुतुल शब्दों की शक्ति से भली-भांति परिचित हैं। उनकी चाह है कि उनकी कविताओं के शब्द उन व्यक्तियों की आंखों व जुबान बनकर

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 5.731
Volume 2, Issue 1, February 2021

सामने आये, जो आंख होते हुए अंधे और जुबान होते हुए गूंगे बने हुए हैं। उनकी कविताओं के स्वर सारे आदिवासी समाज की अव्यवस्था के खिलाफ प्रतिकार को अपने शब्दों में व्यक्त किया है-

"मैं चाहती हू
आंख रहते अंधे आदमी की
आंखें बने मेरे शब्द
उनकी जुबान बने
जो जुबान करते गूगे बने देख रहे हैं तमाशा
चाहती हूं मैं
नगाड़े की तरफ बजे
मेरे शब्द
और निकल पड़े लोग
अपने-अपने घरों से सड़कों पर।"9

आदिवासी साहित्यकारों मैं निर्मला पुतुल की कविता सामग्र आदिवासी स्त्रियों की दशा और उनकी मानसिक विवसता को लेकर शब्दों के माध्यम से सामने आती है। पूंजीवादी,सत्ताधारी, सम्भ्रांत वर्ग भूमि को अधिग्रहण कर सदैव आदिवासी समाज से मुक्त कराते रहे हैं। जबकि आदिवासी क्षेत्र की प्रकृति सत्ता पर मंडरा रहे खतरों के बदले कवयित्री हमेशा आसंकित रहती हैं। उनका विरोध सदैव प्रकृति को बचाएं और बनाए रखने का कवायत करती हुई दिखाई देती हैं। राजनीतिक गलत नीतियों विफलताओं और शासन प्रशासन की निरंकुश चेहरा को व्यक्त करती हैं।

संदर्भः-

01-वर्तमान साहित्य अप्रैल 2009 पृष्ठ संख्या 39
02-नगाड़े की तरह बजाते शब्द निर्मला पुतुल-पृ०सं० 03
03-वही, पृ०स०08
04-हिंदी ललित कविता- रजत रानी मीनू- नवभारत प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण-2009 पृ० संख्या 136
05-नगाड़े के तरफ बजते शब्द, निर्मला पुतुल-पृष्ठ संख्या 8
06-वही०, पृ० सं०30
07-मगहर- मुकेश मानस- अक्टूबर 2012-रोहिणी दिल्ली-085 पृष्ठ संख्या 61
08-नगाड़े की तरह बजते शब्द -निर्मला पुतुल- पृ० सं० 94
09- वही०, पृ० सं०-93

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in